21- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885)

- 28 दिसंबर 1885 मुम्बई गोकुल दास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में लार्ड डफरिन की प्रेरणा से कांग्रेस की स्थापना हुई। जिससे एलन आक्टेवियन ह्यूम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन का अध्यक्षता का व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने की थी।
- लाला लाजपत राय के अनुसार कांग्रेस की स्थापना सुरक्षा कपाट से अनुप्रेरित थी ताकि उस समय भारतीय जनता में व्याप्त असंतोष की भाप को कांगेस रूपी सुरक्षा कपाट के माध्यम से निकाल दिया जाए औ इसी प्रकार भारतीय अपनी आवाज ब्रिटिश शासन तक पहुंचाकर संतुष्ट हो जाता है। दूसरे शब्दों में लाला लाजपत राय के अनुसा रयह भड़ास निकालने वाली संस्था थी।
- कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने अपनी पुस्तक An Introduction to Indian Politics में बाद में स्वीकार किया कि कांग्रेस की उत्पति डफरिन के खुरापाती दिमाग की उपज थी।

क्योंकि कोई भी भारतीय यदि ऐसी संस्था का निर्माण करता तो उसे अवश्य ही अंग्रेजों की दमनकारी नीतियो का शिकार होना पड़ता। कांग्रेस की पृष्ठभूमि में भारतीयों द्वारा स्थापित कुछ राजनीतिक संस्थाएं जो अपने अस्तित्व में तो आई लेकिन उन्हें अंग्रेजों ने विकसित नहीं होने दिया। इस प्रकार है-

1852 - मद्रास नेटिव ऐसोसिएशन - गुजुल लक्ष्मी

1870 - पूना सार्वजनिक सभा - महागोविन्द्र रानाडे

1876 - कलकत्ता Indian Association - सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

1884 - मद्रास महाजन सभा - जी सुब्रमण्यम पी आनंद चार्लू

1885 - मुम्बई - बाम्बे प्रसीडेन्सी ऐसोशियसन - के.टी. कैलग, फिरोजशाह मेहता

1885 कांग्रेस का पथम चरण से 1905

कांग्रेस के इतिहास में 1885-1905 के बीच का काल उदारवादी राजनीति एवं राजनीति भिक्षावृत्ति का युग माना जाता है। इस युग के नेताओं के नेताओं की ब्रिटिश राजतंत्र में असीम आस्था थी तथा वे क्रमिक एवं संवैधानिक नीतियों में विश्वास करते थे। इन उदारवादी नेताओ की नीतिओं को Theory P से परिभाषित किया जाता है।

Petition - याचना

Prayer - प्रार्थना

Protest - प्रतिवाद

कांग्रेस के संदर्भ में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस संस्था का नाम पहले Indian Ntional Union प्रस्तावित था। परंतु दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इसका नाम बदलकर Indian National Congress कर दिया गया। कांग्रेस शब्द वस्तुत अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम से लिया गया है।

अगली महत्वपूर्ण बात यह है कि कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन पूना में प्रस्तावित था परंतु पूना में प्लेग फैल जाने के कारण इसे मुम्बई स्थानांतरित कर दिया गया।

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में मात्र 72 लोग उपस्थित थे। प्रथम अधिवेशन में महत्वपूर्ण नेता सुरेन्द्र नाथ बनर्जी अनुपस्थित थे।

इसके प्रमुख अधिवेशन इस प्रकार हैं-

स्थान	वर्ष	अध्यक्ष	विशेष
मुम्बई	1885	व्योमेश चन्द्र बनर्जी	
कलकत्ता	1886	दादाभाई नरौजी	
मद्रास	1887	बदरूद्दीन तैय्यबजी	कांग्रेस के प्रथम मुसलिम अध्यक्ष
इलाहाबाद	1888	जार्ज यूल	कांग्रेस के प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष
मुम्बई	1889	विलियम वेडरर्वन	पहली बार महिला शामिल हुई।
कलकत्ता	1890	फिरोजशाह मेहता	इस अधिवेश में सर्वप्रथम भारत की पहली महिला स्नातमक कादम्बनी गांगुली (कलकत्ता

			विश्व विद्यालय) ने सम्बोधित किया वह कांग्रेस को संबोधित करने वाली प्रथम महिला थी।
कलकत्ता	1896	एम रहीमत उल्ला सयानी	उस अधिवेशन में सर्वप्रथम बंदेमातरम् गाया गया।
कलकत्ता	1906	दादा भाई नरौजी	इस अधिवेशन में सर्वप्रथम कांग्रेस के मंच से दादा भाई नारौजी ने स्वराज की मांग की।

- भारत में 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग दयानंद सरस्वती ने किया

सूरत	1907	रासबिहारी घोष	कांग्रेस का विभाजन

दो दल स्पष्ट रूप से उभरे (1) गरम दल (2) नरमदल गरम दल के प्रमुख नेताओं में लाल, बाल, पाल एवं अरविन्द घोष

कलकत्ता	1917	एनीबेसेन्ट	कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष
कानपुर	1925	सरोजनी नायडू	कांग्रेस की प्रथम भारत महिला अध्यक्ष

- सैय्यद अहमद खान ने कांग्रेस को दुर्बल बनाने हेतु दो संगठन बनाये।

(i) मौहम्मउन एजुकेशनल कांग्रेस (1886)

(ii) 1888 में कांग्रेस में मुसलमानों का प्रवेश रोकने के लिए United Prtrietic Association की स्थापना की।

कांग्रेस के प्रथम चरण के उदारवादी नेताओं का प्रमुख योगदान यही था कि इन्होंने ब्रिटेन के द्वारा किये जा रहे भारत के आर्थिक शोषण की ओर ध्यान दिलाया। धन के बहिर्गमन का सिद्धांत (Drain Theory of wealth) सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी (ग्रैण्ड औलड मैन ऑफ इंडिया के नाम से भी जाने जाते हैं।) ने अपनी पुस्तक England Debts to India - 1897 में प्रतिपादित किया तत्पश्चात् अपनी पुस्तक Poverty and unbritish rule in India (1901) में उसकी विस्तार से व्यापार की। बाद में धन के बहिर्गमन के सिद्धांत का समर्थन आर.सीर. दत्ता ने 'अपनी पुस्तक Economic history of India under british rule में किया।

लार्ड कर्जन (1899-1905)

लार्ड कर्जन को गोपाल कृष्णा गोखले ने दूसरा औरंगजैब कहा है। लार्ड कर्जन ने 19 जुलाई 1905 में बंगाल विभाजन के निर्णय की घोषण की यह बंगाली एकता को तोड़ने के लिए कर्जन द्वारा किया गया कूटनीतिक प्रयास था। बंगाल का विभाजन 16 अक्टूबर 1905 से प्रभावी हुआ जिसका बंगाल में भयानक विरोध हुआ बंगाल विभाजन के विरोध में चलाये गये इस आंदोलन को बग भंग आंदोलन अथवा स्वदेशी आंदोलन कहा गया इस आंदोलन का प्रभाव लगभग सारे देश में रहा इस प्रकार अंग्रेजों का विरोध करने के लिए भारतीय राष्ट्रवादी भावनाओं को एक नयी प्रेरणा मिली यही कारण है कि लार्ड कर्जन को भारतीय राष्ट्रवाद का उत्प्रेरक भी कहते हैं।

16 अक्टूबर 1905 का दिन सम्पूर्ण बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया। गोखले ने कहा बंगाल विभाजन हमारे घाव पर नमक की तरह हैं। वस्तुतः पूर्वी बंगाल मुस्लिम बहुल क्षेत्र था जिसमें राजशाही चटगांव, ढ़ाका एवं असम के क्षेत्र शामिल थे तो दूसरी ओर पश्चिम बंगाल हिन्दू बाहुल्य क्षेत्र था। जिसमें पश्चिमी बंगाल, बिहार उड़ीसा के क्षेत्र शामिल थे।

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने 16 अक्टूबर 1905 के दिन को हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक दिवस के रूप में रक्षाबंधन दिवस अथवा राखी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की लोगों ने इस दिन उपवास रखा तथा गंगा स्नान किया तथा टेगोर के द्वारा लिखित गीत अमार सोनार बांग्ला एंव बंकिम चन्द्र चटर्जी के लेखन का गायन किया। अमार सोनार बांग्ला बांग्ला देश का राष्ट्रगान है।

1905 INC बनारस अधिवेशन अध्यक्ष गोपाल कृष्ण गोखले ने केवल बंगाल के लिए स्वदेशी एंव बहिष्कार आंदोलन की घोषण की लेकिन लाल, बाल, पाल एवं अरविन्दघोष इस आंदोलन को देशव्यापी बनाने के पक्ष धर थे इस प्रकार 1905 में ही प्रारम्भिक तौर पर कोंग्रेसी नेताओं के बीच मतभेद उभरे। वस्तुत स्वदेशी आंदोलन बाद में व्यापक स्तर पर फैल गया तथा पूरे देश में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई। इस स्वदेशी आंदोलन के प्रमुख नेताओं में-

1. सुरेन्द नाथ बनर्जी
2. कृष्ण कुमार मित्रा
3. अश्विनी कुमार दत्ता
4. अब्दुल रसूद आदि थे।

कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाओं जैसे- बंगाली, हितवादी तथा संजीवनी आदि ने भी स्वदेशी आंदोलन के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाई।

बंगाल से बाहर स्वदेशी आंदोलनों के प्रमुख नेताओं में-

1. महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक ने गणेश महोत्सव तथा शिवाजी उत्सव के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन का प्रचार-प्रसार किया।
2. पंजाब एवं उत्तर प्रदेश में लाला लाजपत राय एवं अजीत सिंह (भगत सिंह के चाचा)।
3. दिल्ली में सैय्यद हैदर रजा।
4 मद्रास में चिदम्बरम पिल्लई।

स्वदेशी आंदोलन भारत का पहला ऐसाआंदोलन था जिसमें पहली बार महिलायें घरों सेबाहर निकली एवं धरने पर बैठी।

लार्ड हार्डिग (1910-1916) के काल में 1911 मे बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया वस्तुतः 1911 में ब्रिटेन के शासक जार्ज पंचम के भारत यात्रा के समय उनके सम्मान में 12 दिसंबर 1911 को दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया और इसी दिन बंगाल विभाजन को रद्द करने की घोषणा की गयी इस बंगाल विभाजन को रदद् किये जाने वाले घोषणा पत्र पर जार्ज पंचम उनकी पत्नी क्वीन मैरी एवं जार्ज मार्ले ने हस्ताक्षर किये थे। इसी दिन ब्रिटिश भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा की गयी। लेकिन यह कार्यान्वयन 1912 मे ही सम्भव हुआ।

दिल्ली दरबार में ही रविन्द्र नाथ टैगोर ने सर्वप्रथम 'जन गण मन' का गायन किया। बाद में NIC 1911 कलकत्ता अधिवेशन अध्यक्ष विशन नारायण धर थे। में सर्वप्रथम सामूहिक रूप से गया गया। वास्तव में 1905, 1906 एवं 1907 के वर्ष भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के परिवर्तन विन्दु माने जाते है।

I.N.C. 1906 कलकत्ता अधिवेशन अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी (इस अधिवेशन में स्वदेशी आन्दोलन के 4 मूल प्रस्ताव):

स्वदेशसी बहिष्कार, स्वशिक्षा एवं स्वशासन को पुनः अनुमोदित किया तथा इसी मंच से दादा भाई नौरोजी ने सर्वप्रथम स्वराज्य की मांगग की। लेकिन स्वराज्य शब्द के अर्थ तथा उसकी प्राप्ति के तौर-तरीकों को लेकर कांग्रेसी नेताओं में मतभेद हो गया।

1907 I.N.C. सूरत अधिवेशन अध्यक्ष रासबिहारी घोष कांग्रेस का दो दलों में विभाजन हो गया-(1) नरम दल (2) गरम दल। इसी जगह से कांग्रेस के दो प्रमुख नेताओं में से विपिनचन्द्र पाल एवं अरविन्द घोष ने सक्रिय राजनीति से सन्यास ले लिया तथा तिलक को गिरफ्तार करके ब्रिटिश सरकार ने मांडले जेल (वर्मा) भेज दिया लार्ड मिन्टो ने लिखा सूरत में कांग्रेस का पतन हमारी बहुत बड़ी जीत है।

तिलक ने मांडले जेल में ही अपनी पुस्तक 'गीता रहस्य' लिखी थी।

वस्तुत 1907 के बाद कांग्रेस का राष्ट्रीय चरित्र-धूमिल सा हो जाता है। नरम दल के प्रमुख नेता गोपाल कृष्ण गोखले ने अपनी भाषा Servents of India Society (भारत सेवक समाज) के माध्यम से राजनीतिक चेतना का प्रचार-प्रसार जारी रखा।

1906 मुस्लिम लीग की स्थापना एवं मुस्लिम सांप्रदायिक की शुरूआत

1906 क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआत

1909 मार्ले-मिन्टो सुधार

1916 लखनऊ समझौता

1917 भारतीय राजनीति में गाँधी का आर्विभाव

मुस्लिम लीग की स्थापना

मुस्लिम लीग की स्थापना 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में नवाब सलीम उल्लाह खान के नेतृत्व में हुई इस संस्था का उद्देश्य था-ब्रिटिश राजव्यवस्था में आस्था बढ़ाना, भारतीय मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करना तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रति मुसलमानों के मन में घृणा पैदा करके उन्हें कांग्रेस में शामिल होने से रोकना।

मुस्लिम लीग का पहला अधिवेशन 1908 अमृतसर (पंजाब) में सय्यद इमाम की अध्यक्षता में हुआ। इस अधिवेशन में आगा खान को मुस्लिम लीग का अध्यक्ष चुना गया। यद्यपि उन्होंने 1912 में अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। इसी अधिवेशन में लीग ने मुसलमानों के लिए एक पृथक निर्वाचक मंडल की मांग की जिसे ब्रिटिश सरकार ने तुरन्त स्वीकार कर लिया और 1909 के मार्ले मिन्टो सुधार (भारतीय परिषद अधिनियम 1909) के तहत मुसलमानों के लिए अधिकारित रूप से पृथक निर्वाचक मंडल की घोषणा कर दी गई।

मार्ले-मिन्टो सुधार (1909)

मार्ले-मिन्टो सुधारों का मुख्य उद्देश्य भारतीय राष्ट्रवादी खैमे में फूट डालकर मुस्लिम सांप्रदायिकता को बढ़ाना था जिसके पीछे फूट डालो और राज करो की नीति कार्य कर रही थी। इस अधिनियम को भारत विभाजन की आधारशिला भी कहा जाता है जिसके तहत मुसलमानों के प्रतिनिधित्व के आधार पर पृथक निर्वाचन मण्डल स्थापित किये गये और इस प्रकार पहली बार देश में जातीय एवं धार्मिक आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों का बंटवारा किया गया। लार्ड मिन्टो ने स्वयमं लिखा ''हम पृथक निर्वाचन मंडल स्थापित करके नागों के दाँत वो रहे है जिसका परिणाम भयंकर होगा।''

लखनऊ समझौता 1916 (कांग्रेस-लीग पैक्ट 1916)

INC, 1916 लखनऊ अध्यक्ष 'अम्बिका चरण मजूमदार' देश में बढ़ रही राष्ट्रवादी भावना और राष्ट्रीय एकता की आकांक्षा के कारण 1916 के कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में दो महत्वपूर्ण घटनाएं घटी-

1. मुस्लिम लीग एवं कांग्रेस ने जल्द से जल्द स्वराज्य की प्राप्ति के लिए सहयोगात्मक रूख अपनाने का निर्णय लिया और लखनऊ समझौते पर हस्ताक्षर किये। लीग और कांग्रेस को करीब लाने में जिन्ना एवं तिलक की महत्वपूर्ण भूमिका थी। लखनऊ समझौता हिन्दू-मुस्लिम एकता के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण कदम था परन्तु इस समझौते ने कांग्रेस ने विधान परिषदों में मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग को स्वीकार कर लिया अर्थात कांग्रेस ने 1909 के मार्ले-मिन्टो सुधारो को स्वीकार कर लिया। लेकिन इसमें हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने हिन्दू-मुस्लिम जनता को शामिल करते हुए अपने राजनीतिक दृष्टिकोण को धर्मनिरपेक्ष बनाने के लिए प्रयास नहीं किया जिससे कि वे समझ सके कि राजनीति में हिन्दू या मुसलमानों के रूप में उनके हित अलग-अलग नहीं है इसलिए लखनऊ समझौते के बाद भी भारतीय राजनीतिक में साम्प्रदायिकता के सिर उठाने की गुंजाइश बाकी रह गयी चूंकि लखनऊ समझौते में अप्रत्यक्ष रूप से यह समाहित था कि बहुसंख्यक हिन्दुओं के देश में मुसलमानों के हित सुरक्षित नहीं है अतः मदन मोहन मालवीय ने लखनऊ समझौते का विरोध किया।
2. दूसरी महत्वपूर्ण घटना-1916 के कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में बाल गंगाधर तिलक को पुनः कांग्रेस में शामिल कर लिया गया अर्थात नरमदल और गरम दल पुनः एक जुट हुये।

EduBull.com